आदर्श गांव की परिकल्पना

चिन्तन-प्रो.आर.के.पाठकए पूर्व निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान,लखनऊ,
होमा प्रशिक्षक और प्रचारक, फाइव फोल्ड पाथ मिशन -मेल pathakramkripal@gmail.com;
च- ०६४५४६७४४२२ए ८८२८४८६७३७

वर्तमान समय कि खेती खनिज तथा विदेश से आयातित कृषि रसायनो पर आधारित है। परिणामतः यह निरन्तर मंहगी, विषाक्त भूमि, जल तथा वातावरण प्रदूषण की समस्या भयावह होती जा रही है।विगत ६-७ दशकों में कृषि रसायन के अंधाधुध उपयोग कारण भूमि में जीवान्श (जैविक कार्बन) जो भूमि की आत्मा है तथा वायुमंडल में प्राणिक ऊर्जा निरंतर कमी होती जा रही है । वर्तमान समय कि समस्या जैसे मौसम में त्वरित बदलाव, तथा नाना प्रकार के प्राकृतिक कहर जैसे ओला,पाला सूखा असामयिक बारिश, बाढ, चक्रवात ,भूकंप, सूनामी ,जंगलों में आग और परिवार और समाज तथा देश में तनाव युध्दए नाना प्रकार के रोग आदि जिनकी कल्पना नहिं की जा सकती विश्व के प्रतेक देशों में घटित हो रही है। इन समस्यावों का एक कारण दोनो ऊर्जा यथा भूमि का जैविक कार्बन और वायुमंडल से प्राणिक ऊर्जा का क्षीण होना है। ध्यान देने कि बात है कि इन्हे नतो किसी इन्डस्टी या प्रयोग शाला में बनाया अथवा बाहर से आयात किया जासकता है। ऊर्वर भूमि में जैविक कार्बन एक प्रतिशत से अधिक होनी चाहिये पर यह ०.५ प्रतिशत से कम तथा कई स्थानों पर यह ०. तीन प्रतिशत से भी कम हो गई है।यह चिंतन की बात है। परिणामतः भूमि, वायु व जल के प्रदूषण के कारण अनाज व अन्य खाद्य पदार्थ प्रदूषण से प्रभावित हो रहे हैं। इनके उपयोग से प्राकृतिक संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। परिणामतः भूमि की उर्वरता, उत्पादन क्षमता , गुणवत्ता, उत्पाद की भन्डारण क्षमता तथा रसायन अवशेष की विषाक्तता की समस्यायें निरन्तर बढ़ रही हैं।

टिकाऊ तथा सदाबहार खेती का एक मात्र विकल्प प्रकृति (ब्रहमांड) के अक्षुण स्त्रोत पंच महाभूत यानि पृथ्वी , जल, अग्नि, वायु व आकाश तत्व हैं। हमारे पूर्वज इन तत्वों का पूजन व अर्चन करते थे तथा इनकी ऊर्जा बिना किसी खर्च के मानव को उपलब्ध होते थे। पंचमहाभूत कि ऊर्जा आज के समय में उपलब्ध है। हमे इनकी ऊर्जा के उपयोग का ज्ञान क लगन होनी चाहिए। अपने दो दशक के अनुभवों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया । उल्लेखनीय है कि भारतवर्ष में आदिकाल से बिना किसी रसायन के उपयोग से खेती की जाती रही है। आज की समस्याओं के निवारण का विकल्प पुनः पारंपरिक विधियों का अवलम्बन किये जाने की आवश्यकता है ।

कासमिक ऊर्जा के कुछ तथ्य

- सभी प्रकार के कार्य करने में में किसी न किसी प्रकार के ऊर्जा की आवश्यकता पडती है।
- भू मन्डल पर ऊर्जा के स्त्रोत पंच महाभूत हैं।
- इनकी ऊर्जा मानव के लिए बिना किसी खर्च के उपलब्ध है ।
- हमें इनकी ऊर्जा के लाभ का ज्ञान, लगन और ललक होनी चाहिए ।
- सूरज की ऊर्जा तो केवल दिन में उपलब्ध है पर अन्य स्त्रोत की ऊर्जा हर समय उपलब्ध है।
- भारत सरकार सौर ऊर्जा दोहन को प्रोतसाहित कर दे रही है।
- पर अभी तक के सभी सौर ऊर्जा दोहन के संसाधन काफी महंगे तथा भव्शिय में इनके निस्तारण की समस्या हो सकती है।
- पृथ्वी पर पडने वाली सौर ऊर्जा की मात्र एक प्रतिशत विश्व की ऊर्जा को पूरी कर सकता है।
- सभी जैव गति विधियों में ब्रहमांडीय ऊर्जा का योगदान होता है।
- ब्रहमांड की ऊर्जा प्रदूषण मुक्त है तथा सभी को एक समान बिना किसी खर्च के मुफ्त में उपलब्ध है।

विचार करने पर स्पस्ट होता है कि : प्रकृति अपना अनुदान मानव कल्याण हेतु भरपूर लुटा रही है , केवल हमें इन अनुदानों के उपयोग करने का ज्ञान व ललक होना चाहिए।

कासमिक ऊर्जा दोहन में प्रकृति की व्यवस्था

- भूमि में व्दिमान सूक्ष्मजीव तंत्र,जीव जंतु व केचुवे ब्रहमंडीय ऊर्जा दोहन में सक्षम होते हैं।
- पौधे के पत्ती के निचली सतह पर हजारों रन्ध्र कार्बन डाईआक्साईड का भक्षण कर प्राणवायु बनाने में प्रतेक पल कार्यरत रहते हैं ।
- पत्ती के क्लारोफिल सूर्य ऊर्जा से प्रकाश सश्लेषण व्दारा भोजन बनाने का एक प्रमुख साधन है।
- इनके बिना हमें न प्राण वायु न जल तथा नहीं भोजन उपलव्ध हो पायेगा।
- कुछ पौधें में वायुमंडल के नत्रजन दोहन में सक्षम होते हैं ।
- देशी गाय की बेली व थन में बेसिलस सबटेलिस जीवाणुं पाये जाते हैं ।
- अतः इनसे प्राप्त गोबर, गोमूत्र व दूध लाभकारी जिवांणु बाहुल्य होते हैं।
- देशी गाय की बेली गाय की बेली ब्रहमांड का लघु प्रतीक , इनकी पीढ पर उभार ऊर्जा दोहन में सक्षम तथा सीगं का सूर्य ऊर्जा दोहन में प्रभावी योगदान होसकता है ।

प्रकृति कि इन्ही के समन्वय से बिना रसायन के के उपयोग से की गयी खेती को कासमिक कृषि के नाम से प्रोत्साहित करने में प्रयासरत हैं। सबके सहयोग से संभावित है।

विचारणी बिन्दु-प्राकृति ने अपने अनुदान भूमि, जल, वायु, अग्नि व आकास मानव को मुफत में उपलव्ध करायें हैं। हम इनके रक्षक है। हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि इनका उपयोग इस प्रकार किया जाय कि आने वाली पीढी को उन्नति अवस्था अथवा जिस अवस्था में हमने अपने पूर्वजों से पाया है उस अवस्था में उपलव्ध करायें। प्रकृति के इन अनुदानो को मानव थोडे प्रयास से अपने जीवन यापन के लिये उपयोग कर सकता है। इन्ही अनुभवों के विवेचन का प्रयास किया गया है।

१. पंचाग अनुसार खेती

- सूरज वर्ष में छह माह उत्तरायण तथा छह माह दक्षिणायण में रहता है।
- चन्द्र माह में १५ दिन शुक्ल पक्ष व कृश्ण पक्ष में रहता है।
- चढाव अवस्था में पृथ्वी ऊपर श्वांस छोडती है तथा उतार की अवस्था में अंदर श्वांस लेती है।
- यह अवस्था प्रति दिन अनुभव किया जा सकता है।
- प्रातःकाल अपरान्ह तक प्रत्येक दिवस पृथ्वी ऊपर स्वांस छोडती है।
- अपरान्ह से मध्य रात तक पृथ्वी अंदर स्वांस लेती है।
- अतः खेती कि सामान्य भूमि से संबंधित गत विधियॉ पृथ्वी के अंदर स्वांस लेने के समय तथा ऊपर की गत विधीयॉ उपर स्वांस छोडते समय किया जाना चाहीए।

इसी आधार पर भूमिगत गति विधियॉ यथा खाद बनाना, उपयोग, बुआई/पौधा रोपण, कन्दमूल की खुदाई इत्यादि अपरान्ह में किया जाना चाहिये ।

कृषि पचांग अपनाने से लाभ

- कृषि के विविध कार्य पंचाग अनुसार करने पर अलग से धन का खर्च नहीं होता है।
- माह में चार वर्जित दिन यथा राहू केतू तथा एपोजी (चांद अती दूर) पेरजी (चांद अती पास) के दिन नये खेती के कार्य नहीं करना चाहीए।

- एपोजी के दिन केले का रोपण करने पर बिमारी कम लगती है।
- पर एपोजी के दिन आलू बोने पर अच्छा प्रभाव पडता है।
- सामन्यतः १२-१५ प्रतिशत अधिक उत्पादन केवल कृषि पंचाग अपनाने से प्राप्त किया जा सकता है।
- उत्पाद कि उच्च्व गुणवत्ता, अच्छी भंडारण क्षमता भी होती है।
- कीट और रोग का संक्रमण कम होता है।
- पंचाग का अनूपालन विभिन्न जैविक विधाओं तथा सामान्य खेती में भी अपनाना चाहीये ।

२ **कासमिक पौध पोषण**

प्रकृति के तीन प्रतिनिधि गायःभमि के सूक्ष्म जीवतंत्र मिटटी के निवासी और वनस्पतियां हैं। इनके सहयोग से पंचमहाभूत कि ऊर्जा का उपयोग खेती में किया जा सकता है।

कासमिक पौध पोषण में किसान के सोच में बदलाव की आवश्यकता है। सभी पोषक तत्व आक्सीकृत, चिलेट व आयन के रुप में पोघे लेते हैं।यह कार्य भूमि में पाये जाने वाले सूक्ष्मजीव तंत्र व केचुवों की सक्रियता पर निर्भर करता है।

- पौध पोषण में ३० से अधिक पोषक तत्वों की आवश्यकता गुणवत्ता युक्त उत्पादन हेतु होती है ।
- पर मानव अपनी विभिन्न गतिविधियों से वायुमंडल को प्रदूषित कर रहे हैं।
- भूमि को अन्नपूर्णा कहा जाता है।
- भूमि से उपलब्ध होने वाले सभी पोषक तत्व पाये जाते है।
- सामान्यतः ये निचले तह में अनुपलब्ध अवस्था में रहते हैं।
- इनमें प्रमुख, गौण और सूक्ष्म मात्रिक तत्व होते हैं।
- इन तत्वों को ऊपरी परत पर लेआने और उपलब्धा बठाने का प्रयास किया जाना चाहिये।
- सभी पोषक तत्वों कि उपलव्धा होने पर गुणवत्ता युक्त उत्पादन संभामित होता है।
- वायुमंडल में ७८ प्रतिशत नत्रजन मुफत में उपलब्ध है ।
- प्रति हेक्टेअर वायुमंडल में ७५-८० हजार टन नत्रजन मुफत में उपलब्ध है।
- पौधे सीधे इस नत्रजन को उपयोग करने में सक्षम नहीं होते हैं।
- पर कुछ नत्रजन दोहक और लेगुमिनेसी कुल के पौधो की जडों की गन्थ्रियों के बैक्टिरिया तथा कुछ अन्य पौध वायूमंडल की नत्रजन दोहन में सक्षम होते हैं।
- इस कुल में शाकीय, झाडी, लता, बहुवर्षीय, हर मौसम में उगने वाले विविध पौधे आते है।
- इनसे अनाज, दलहन, चारा, ईंधन, इमारती लकडी, प्राकृतिक रंग, औषधि आदि प्राप्त होते है।
- गावों में भूमि, जलवायु तथा सुविधानुसार ं खेत -खलिहान, बाग- बगीचों , तालाब, पोखरों, पर अधिक से अधिक संख्या में उगाना चाहिये।
- इनसे प्राप्त अवशेष को कम्पोस्ट, हरी खाद तथा पलवार आदि हेतू उपयोग किया जाना चाहिए।
- भूमि में प्रचुर मात्रा में फासफोरस व अन्य तत्व गहराई में उपलब्ध है। इनको उपरी सतह पर ले आने और घुलनशीलता बठाने की आवश्यकता है।
- इस निमित्त पेड-पौधे व केचुवे अहम योगदान देने में सक्षम हैं।
- पोटाश की उपलब्धता जैव अवशेष के विधटन से कराया जा सकता है।
- अधिक से अधिक पौधे उगाकर इनसे प्राप्त जैव अवशेष को खेत में विधटित अथवा कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जाना चाहिए।

३. जैव परिस्थितिकि विकास

गांव में पादप, जीव, जन्तु, जानवर, पक्षी, जीवाणुओं, केचुआ, मधु-मक्खिओं आदि की विविधता जैविक वातावरण के बनाने में सहायक होते हैं। अतः गांव में जलवायु, भूमि उपलब्धतानुसार नीम, करंज, बांस, महुआ, इमली, बरगद, पाकड़, पीपल,अर्जुन, नीमि आम, शरीफा, जामुन, गूलर, शहजन, शहतूत, आंवला, बेल, पलास, चन्दन, शमी, ग्लिरिसिडिया, अगस्तए सुबबूल,अरहर आदि के रोपण तथा रख रखाव को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। पौधे प्रकाश संश्लेषण के साथ साथ में भूमि कटाव रोकाने तथा कासमिक खेती में उपयोग हेतु बायोमास उपलब्ध कराने में सहायक होते है । इनकी जडें भूमि को पोली बनाने तथा गहरायी में पाये जाने वाले तत्वों को ऊपरी सतह पर ले आने में सहायक होते हैं। इसके साथ ही केचुवों की कार्य क्षमता बठाने में इनका योगदान होता है ।

इसके साथ ही वातावरण से कार्बन डायीआक्साईड को को अपने काष्ठ में भन्डारित करते हैं। बायोमास का उपयोग कम्पोस्ट, जैव नियामकए जैव कीटनाशी बनाने एवं पलवार हेतु किया जाता है। उल्लेखनीय है की कुछ वृक्ष जैसे बरगद, पाकड, पीपल, पलास, आम, बेल शमी, आदि की फैलाव की मिट्टी जीवांणु बाहुल्य होती है । पेड-पौधे ब्रहमा विष्णु और शंकर की भमिका मानव कल्लायण हेतु निभते हैं। इनकी उपयोगिता अंगीकार करने और हरीतमा संवर्धन कि आवश्यकता है। इनका उपयोग कम्पोस्टए पलवार तथा जैव नियामक बनाने में किए जाने की आवश्यकता है।

जीवान्श उपलब्धता कें घटक

- पौध अवशेष को खेत में पर विधटन हेतु प्रोत्साहित किया जाय।
- उपलब्धतानुसार नियमित कम्पोस्ट का उपयोग किया जाय ।
- फसल चक्र अनुसार फसल उत्पादन व्यवस्था अपनाइ जाय ।
- दलहनी फसलों का फसल, सहफसली, आवरण फसल तथा हरी खाद के रूप में प्रोत्साहन।
- जब तथ जहां संभव हो सके पलवार का अनुपालन किया जाय।
- मेडबन्दी व्दारा वर्षा जल का खेत में रोक थाम किया जाय ।
- भूमि में कम से कम कृषि क्रियायें तथा रसायन उपयोग प्रतिबंधित रखा जाय।

४ पलवार

भूमि की सतह को कभी खुले नहीं रहने देना चाहिए। खुला छोंड़ने पर वर्षा जल तथा तेज वायु वेग से भूमि का मौसम में बदलाव के साथ मानव अपना परिधान बदलते रहते हैं पर पौघे खुले वायूमंडल में रहना पडता है। पलवार सुरक्षा कवच का काम करती है।अतः जब व जहां संभव हो आसानी से उपलब्ध जैव अवशेष के उपयोग से पलवार का लाभ लेना चाहिये। पाढक

कटाव होता रहता है। अतः भूमि सतह पर यातो कोई फसल खड़ी हो अथवा स्थानीय रूप से उपलब्ध जैविक अवशेष यथा पुआल, गन्ने की पत्ती, घास-फूस, केला के पत्ती आदि की एक मोटी परत १५-२५ से०मी० पलवार हेतु बिछाकर रखना चाहिए। इसे पलवार (मलचिंग) के नाम से जाना जाता है। इस प्रक्रिया में प्रयास किया जाय कि आधा अवशेष दलहनी फसलो को होना चाहिए। पलवार के उपयोग से भूमि का अपरदन रूकने के साथ-साथ, खर-पतवार नियंत्रित रहते है। पानी का वाष्पीकरण कम होता तथा निरन्तर विघटित ह़ोने से भूमि में जीवांश की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। साथ ही साथ सब्जी/फल का सम्पर्क सीधे भूमि से नहीं रहता है। भूमि का तापक्रम नियंत्रित रहता हैं सूक्ष्मजीव तथा केचुऑ का सक्रियता हेतु जैविक अवशेष को २५-३२° से०ग्रे० तापक्रम, ६५-७५ प्रतिशत नमी तथा अंधेरा होना चाहिए। ये सभी शर्ते मात्र पलवार द्वारा उपलब्ध हो पाती है। पलवार को जैव नियामक से तर करने से हम अनगिनत संख्या में सूक्ष्मजीव तथा भूमि की एक से दो मीटर की गहराई में उपलब्ध केचुओं को निमंत्रण देते हैं जो

ऊपरी सतह पर आकर अपना कार्य सम्पादित कर इन्हे उच्च गुणवत्ता युक्त जैविक खाद बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

संज्ञान की बात- मौसम में बदलाव के साथ मानव अपना परिधान बदलते रहते हैं। पर पौधों को खुले आकाश में मौसम की मार शहन करना पडता है। पलवार एक सुरक्षा कवच की भाति प्रभावी योगदान देती है।

पलवार का योगदान

- भूमि के सूक्ष्मजीव तंत्र अंधेरे में कार्य करते हैं। पलवार से इनकी कार्य क्षमता बठ जाती है ।
- भूमि में विद्यमान नमी का संरक्षण व रात्रि में कासमिक ऊर्जा व ओश का अवशोषण होता है ।
- खरपतवार का प्रभावी नियंत्रण रहता है ।
- भूमि के बहाव में प्रभावी रोकथाम होता है ।
- पौधों के मूलतन्त्र के आसपास उचित नमी तथा तापमान रखने में सहायक होता है।
- जैविक पदार्थों का नियमित रूप से पलवार के रूप में प्रयोग करते रहने से भूमि की भौतिक, रसायनिक तथा जैविक दशा में निरन्तर सुधार होता रहता है ।
- केंचुओं तथा सूक्ष्मजीवों की संख्या तथा गतिविधियों के वृद्धि में सहायक होता है।
- कुछ फलों व सब्जियों का संपर्क भूमि से बच जाता है। जिससे इनकी गुणवत्ता अच्छी होती है।
- बढ़वार कर रहे फलों के गिरने में कमी, अधिक व उच्चगुणवत्ता युक्त उत्पादन।

जीवान्श का भूमि उर्वरता में योगदान

- भूमि पोली रहती है।
- खेती के कार्य सुगमता पूर्वक की जा सकती हैं।
- भूमि में जल रोकने की क्षमता बढती है। परिणामतः हलकी सिंचाई से काम चल जाता है।
- जीवान्श के कारण भारी भूमि हलकी तथा बलुवार भूमि भारी हो जाती है।
- वायुमंडल में उपलब्ध ऊर्जा व नमी के दोहन व संचय होता है।
- पौधो की मागं अनुसार सभी पोषक तत्व उपलब्ध कराने में अहम योगदान ।
- कासमिक खेती में जीवान्श को बढाये तथा स्थिर बनाये रखने का प्रयास किया जाना चाहिए।

५. केचुओं का योगदान -

केचुअे किसान के परम मित्र हैं। वे बिना किसी पगार के अपना योगदान भूमि की उर्वरता बठाने तथा बनाये रखने हेतु प्रतेक पल कार्यरत रहते हैं । देशी केचुओं की दो प्रकार की प्रजातियॅा होती हैं । एक जाति के केचुअे भूमि के ऊपरी सतह ३० -४५ से. मीटर तथा दूसरी जाति २ मीटर गहराई तक कार्यरत रहते हैं। पानी तथा भोजन की कमी होने पर ये इनकी तलास में गहराई में जाकर समाधी अवस्था में बने रहते हैं। जैसे इन्हे अनुकूल वातावरण मिलता है ये भूमि की ऊपरी सतह पर आते हैं। आते-जाते भूमि में अलग अलग छेद बनाते हैं। ये कंकड, पत्थर, चूनखडी, बालू "पौध अवशेष आदि खाकर इन्हे बहुमूल्य विष्टा ह्यूमस के खजाने को भूमि की सतह पर डालते हैं। देशी केचुअे की विश्टा में उच्च गुणवत्ता खादय तत्व व संजीवक होते हैं। इसमें अक्टीनोमायसिटज ,स्टेप्टोमायसीस, एजोटोबैक्टर, एजोसप्रिलम जैसे उपयोगी सूक्ष्म जीवाणुं होते हैं,जो बिमारी पैदा करने वाले रोगाणुवों को नष्ट करते हैं।

देशी केचुअे की आंत एक अदभूत जैव सयंत्र का कार्य करती है जिससे सूक्ष्म जीवाणूं की संख्या बढती है जो भूमि की उर्वरता बनाने में अपना योगदान देते हैं। केचुअे के विष्टा एक प्रभावकारी जैव उर्वरक है। इसमें ६ गुना अधिक नत्रजन, आठ गुना फासफोरस, दस गुना पोटाश , ११ गुना गुणा से अधिक गंधक तथा दुगना से अधिक गुना कैलशियम व

मैगनीषियम होता है। फसलों की जडें कुछ आक्सिन के सहायता से आसानी से सोख लेती हैं। गहरायी तक वायु का आवागमन से भूमि पोली रहती है। कृषि क्रियायें सुगमता पूर्वक किये जा सकतें है।

भूमि में जल धारण क्षमता बढती है। भूमि में केंचुये तथा नाना प्रकार के सूक्ष्म जीव तन्त्र यथा नत्रजन स्थिरीकरण जीवाणु, राइजोबैक्टीरिया (दलहनी फसलों में नत्रजन स्थिरीकारक) एवं फास्फोबैक्टीरिया फास्फोरस की घुलनशीलता बढाने में अहम योगदान है। किसान का प्रयास होना चाहिए कि ऐसी व्यवस्था बनायी जाय जिससे भूमि की भौतिक, रासायनिक तथा विशेष कर जैविक दशा में निरतंर सुधार होता रहे।

६. गाय का कासमिक खेती में योगदान

कासमिक खेती में बाहरी आदान के रुप में केवल गाय कि आवश्कता पडती है । मात्र दो देशी गाय से ४-५ हेक्टेयर की कासमिक खेती की जा सकती है। गाय के पीठ पर डील पिरामिड अकार का होता है । डील और सींग दोनो सौर ऊर्जा दोहन में सहायक होती है। गाय की बेली कासमास का लघु प्रतीक है। इनका सौर ऊर्जा दोहन में योगदान होता है।

पर बिडमंना है कि जब तक गाय थोडी मात्रा में दूध देती रहती है तभी तक उसका पालन पोषण किसान करते हैं। दूध बन्द होते ही पालीथीन खाने के लिये खुले छोड दिया जाता है। किसान के संज्ञान में ले आने कि आवश्कता है कि गाय में ब्रहमांडीय उर्जा के दोहन की असीम क्षमता है। अतः इनका पालन पोषण जैविक वातावरण में किया जाना चाहिये तथा उनसे प्राप्त उच्च्य गुणवत्ता युक्त उत्पादों का उपयोग कासमिक खेती की प्रोतसाहन करने की अवश्यकता है।

५. गाय प्रमुख जैव नियामक - अमृतपानी, बीजामृत, जीवामृत, पंचगव्य वर्मीवाश, काउ पैट पिट, अग्निहोत्र जल, बायोसोल आदि हैं। इनका उपयोग जैव अवशेष के विघटन, कम्पोस्टिंग, बीज तथा पौध उपचार, भूमि की उत्पादकता बढाने, बीज भन्डारण आदि हेतु किया जाता है। सभी जैवि नियामक सूक्ष्मजीव बाहुल्य, तथा प्रचुर मात्रा में पोषण (मुख्य एवं गौण), नत्रजन दोहक व फासफोरस घोलक सूक्ष्मजीव विद्यमान होते हैं। अच्छी प्रकार छनाई कर टपक तथा बाछौरी सिंचाई से इनके उपयोग के प्रोत्साहन कि आवश्यकता है।खेती के विभिन्न गत विधियों में उपयोग किये जा रहे जैव नियामकों में कुछ का विवेचन निम्नवत है।

बीज व पौध शोधन

अंकुरित कर रहा पौधा कोमल होता है इस अवस्था में बीज व भूमि जनित व्याधियों के संक्रमण की समस्या होती है। बोने या रोपण के पहिले इनका उपचार आवश्यक है। उपचार हेतु बीजामृत व पंचगव्य आदि का उपयोग का उपयोग पौध शोधन के लिये किया जाता है।

- अंकुरित कर रहा बीज अति कोमल होता है।
- ऐसी अवस्था में बीज जनित/भूमि जनित कीट और व्याधियों के संक्रमण की अधिक सम्भावना होती है।
- अतः बुआई/रोपण पूर्व इनका उपचार आवश्यक होता है।
- पर जैविक खेती में बीजोपचार आवश्यक हो जाता है।

बीजामृत हेतु पांच किलो गोबर को एक कपडे की पोटली में रख कर पानी में में डुबा दिया जाय। एक हडियां में ५० ग्राम चूने के एक लीटर पानी में भिगोया जाय । अगले दिन पोटली को तीन बार पानी से मिला कर गोबर का शत जल में आ जाय । पांच लीटर गोमूत्र मिला कर अच्छी प्रकार फेंटायी किया जाय। १०० ग्राम उर्वर माटी मिलायी जाय। यदि उपलव्ध हो तो एक लीटर गाय का दूध मिलाया जाय। चूने के पानी मिलाया जाय । घोल को पानी मिलाकर २० लीटर बना लिया जाय। पर आलू व गन्ना के शोधन हेतु ५० लीठर पानी मिलाकर बनाया जाय।

बीजामृत व पंचगव्य से उपचार

✓ बीजों पर इनको छिड़कर, निथारकर, साये में सुखा लिया जाय।

✓ हल्दी/अदरक/आलू/गन्ना हेतु रोपण भाग को २०-३० मिनट तक शोधित किया जाय।

- ✓ जिन फसलों में रोपाई किया जाता है,उनमें बीज तथा पौध दोनो को उपचारित किया जाय।
- ✓ उपचार हेतु ताजा बीजामृत बनाकर उपयोग किया जाना चाहिये ।

जीवामृत- र्वतमान समय में प्रयोग किये जाने वाले जैव नियामक में जीवामृत का स्थान पहला है-क्यों कि-अन्य जैव नियामक से सस्ता बनाना सरल पडता है। इसे मात्र ४-५ दिन में बनाया जा सकता है।इसका उपयोग ५-७ दिनों में किया जाना चाहिए। इसका उपयोग फसल अवशेष के शीघ्र विघटन हेतु प्रभावी पाया गया है। इसे प्रत्येक सिंचाई के साथ बना कर भूमि में दिया जा सकता है। अच्छी प्रकार छनाई कर टपक अथवा बौछारी सिंचाई द्वारा इसका प्रयोग किया जा सकता है।

जीवामृत बनाने की विधि

किसी पात्र में ५०-७० ली. साफ पानी में १० कि.ग्रा. गोबर मिलाकर इसमें ५-१० लीटर गोमूत्र .अच्छी प्रकार मिलाया जाय। इसमें एक कि.ग्रा. उपजाऊ माटी एक किलो गुड़ और दलहन का आटा एक कि.ग्रा. डालकर अच्छी प्रकार मिलायें। पात्र को कपड़े/नाइलान की जाली से ढके कर रखा जाय। प्रतिदिन ३-५ मिनट तक अच्छी प्रकार चलाते रहा जाय। इस प्रकार जीवामृत ४-५ दिन में तैयार हो जाता है तथा इसे ५-७ दिनों में उपयोग कर लिया जाना चाहिये।

जीवामृत का उपयोग

- २०० ली. जीवामृत प्रति एकड़ में सिंचाई के पानी के साथ खेत की तैयारी के समय फैलाव विधी से दिया जाय ।
- उचित होगा कि हर सिंचाई के साथ जीवामृत का उपयोग किया जाय।
- फलों में बाहरी फैलाव के नीचे ५०-६० सेमी. चौड़ी व २५-३० सेमी. गहरी नाली बनाकर १५-२० दिन खुला छोडने के बाद जैव अवशेष पलवार के रूप में भरकर जीवामृत से तर कर दिया जाय।
- टपक /बौछारी सिंचाई के पानी के साथ अच्छी तरह से छनाई कर उपयोग किया जाय।

नोटः बीजामृत से बीज और रोपण किये जाने वाले भाग का उपचार, खेत कि तैयारी तथा प्रतेक सिचाइ के साथ जीवामृत उपयोग और पलवार के नियमित उपयोग से वापसा यानी वायू संचालन बढा कर खेती कि जासकती है। पर इसे और प्रभावी बनाने हेतू अन्य विधायें सोने में सुहागे के रू॰ में सहायक होती हैं।

पंचगव्य - गाय के विभिन्न उत्पादों से बना उपयोगी जैव नियामक है जिसमें पौधों की बढ़वार प्रोत्साहित करने एवं रोग रोधक क्षमता बढाने की अदभुत क्षमता होती है। पंचगव्य बनाने की सामग्री व विधा का विवेचन निम्न है।

- पांच कि. ग्रा. ताजा गाय के गोबर में ५०० ग्राम गाय का घी अच्छी प्रकार फेंटकर तीन दिन तक ढक पात्र के मुह को ढक कर रखा जाय ।
- मिश्रण में चौथे दिन गोमूत्र, ३ लीटर, दूध, २ लीटर, दही, २ लीटर, नारियल पानी, २ लीटर गन्ने का रस ३ लीटर तथा १२ पके केले को मसल कर अच्छी प्रकार मिलाया जाय।
- पात्र के मुख को कपड़े अथवा महीन जाली ढके रखा जाय तथा प्रत्येक दिन नियमित तीन बार अच्छी तरह फेंटायी करते रहा जाय। इस प्रकार १८ दिन में पंचगव्य तैयार हो जाता है ।
- अगर गन्ने का रस उपलब्ध न हो तो ५०० ग्राम गुड़ को २ लीटर पानी में घोल कर उपयोग किया जाय।

पंचगव्य विधियां

- तीन प्रतिशत ;३ किलो १००लीटर पानीद्ध हर फसल में उपयोगी पाया गया है ।
- प्रयोग बीज शोधन तथा पौघ पर छिडकाव से किया जाना चाहिये ।
- पंचगव्य का उपयोग जानवर, मछली, बकरी, सूकर आदि के पालन में किया जाना चाहिए ।

खेती के सभी कार्यक्रम हेतु जैव नियामक उपलव्ध हैं। आवश्यकतानुसार बनाकर उपयोग किया जाना चाहिये। इसका संक्षिप्त उल्लेख निम्न है।

क्रमाकं	खेती के कार्य	उपयोगी जैव नियामक
१	अनाज व बीज भन्डारण	पंचगव्य, सी सी पी, अगिन्नहोत्र भस्म आदि
२	बीज व पौध उपचारण	अमृत पानी, बीजामृत, कुनाप जल, पंचगव्य,सी सी पी, अग्निहोत्र भस्म आदि
३	जैव अवशेष के विधटन	जीवामृत, सी सी पी, पंचगव्य, अग्निहोत्र भस्म आदि
४	भूमि की उर्वरता बढाना	जीवामृत, सी सी पी, पंचगव्य, कुनापजल, अग्निहोत्र भस्म आदि
५	पौध की बढवार बढाना	अमृत पानी, पंचगव्य, सी सी पी, कुनापजल, अग्निहोत्र भस्म बायोसाल आदि
६	कीट व व्याधि नियत्रंण़	कुनापजलए पंचगव्य , अग्निहोत्र भस्म, बायोसाल आदि

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है की खेती के सभी कार्य हेतु गौ उत्पाद से बनाये जाने वाले जैव नियामक उपलव्ध है। इस निमित्त थोडी सुविधा व प्रशिक्षण दिलाकर विशेष कर गांव की महिलावों की उपयोगिता बढाने का अनूढा अवसर होगा।

जैव नियामक अपनाने के सूत्र

- ध्यान रखा जाय कि खेत में र्पयाप्त मात्रा में जैव अवशेस होने पर ही जैव नियामक प्रभावी होगा।
- अतः खेत में अधिक से अधिक जैव अवशेष की व्यवस्था किया जाना चाहिए।
- किसी भी अवस्था में खेत में जैव अवशेष को नहीं जलाना चाहिए।
- हरी खाद, फलवृक्ष के अवशेष, खर-पतवार, जंगल से प्राप्त ,आस पास से एकत्र कर अवशेष की व्यवस्था किया जा सकता है।

अनुभव के अधार पर देखा गया है कि जीवामृत का भूमि व पंचगव्य का उपयोग पौधों पर अधिक प्रभावी होता है। पर यदि पंचगव्य के अभाव में जीवामृत को अच्छी प्रकार छनाई कर छिडकाव भी किया जा सकता है।

५ अग्निहोत्र कृषि

अग्निहोत्र वेद में उल्लेखित प्राण ऊर्जा सिद्धान्त पर आधारित विज्ञान है, जो हजारो वर्ष पूर्व मानव सभ्यता के साथ प्रचलित था। इसका प्रत्तेक घर में नियमित पालन होता था । चिन्तन करने पर स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारक आज की मानवीय गतिविधियां हैं। प्रदूषण के कारण भूमि,जल व वायु पंच महाभूत के तीन घटक प्रदूषित हो गये हैं। आदि काल में जो भी प्रदूषण, मानवीय गतिविधियों द्वारा होती थीं, उसके निवारण हेतु

प्रत्येक परिवार में अनिवार्य रुप से यज्ञ करने की प्रथा प्रचलित थी।नियमित यज्ञ करने के कारण वायुमंडल शुध्द रहता था, तथा पंच महाभूत अपना अनुदान मानव कल्याण हेतु बिना किसी परिश्रम के उपलव्ध कराते रहते थे। पर आज यह धरती से लुप्तप्राय हो गया।इसका परिणाम आज पूरा मानव समाज भुगत रहा है। प्राचीन ग्रन्थो का अध्ययन करने से इसकी महत्ता की अनुभूति की जा सकती है।

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भयावह हो गयी है । इससे पूरा विश्व समाज परेशान है। इसके निदान हेतु कोई कारगर उपाय नहीं निकल पाया है। इस समस्या के निदान हेतु स्वामी गजानंद जिन्हे कालकी अवतार के रूप में मान्यता है ने होमा थीरेपी जिसमें अग्निहोत्र प्रमुख धटक है का अपने अथक प्रयास से मानकीकरण किया है।इस विधा में ताबें के विशेष आकार के पात्र में सूर्योदय व सूर्यास्त के समय घी लेपित अक्षत की मंत्रोचारण के साथ दो आहुतियां दी जाती है।

अग्निहोत्र की प्रकृतिः प्राचीन विज्ञान परम्परा में अग्निहोत्र के बारें में उल्लेखित है कि अग्निहोत्र के समय तांबे के पात्र के आसपास प्रचण्ड मात्रा में विशिष्ट ऊर्जा क्षेत्र का निमार्ण होता है तथा पात्र के पास चुंबकीय सदृश्य क्षेत्र का निर्माण होता है, जो कि नकारात्मक ऊर्जा को निष्क्रिय कर देता है तथा सकारात्मक ऊर्जा क्षेत्र को प्रबल बनाता है। परिणाम स्वरूप अग्निहोत्र किये जाने वाले स्थान के आसपास एक सकारात्मक उर्जा क्षेत्र का निर्माण हो जाता है, जिससे सिर्फ अग्निहोत्र करने वाले व्यक्ति को ही नहीं अपितु उस सकारात्मक क्षेत्र में आने वाले सभी वनस्पतियों व जीवों को इसका लाभ पहुँचाता है।

जब अग्निहोत्र किया जाता है तब वातावरण में सिर्फ अग्नि की ऊर्जा ही नहीं रहती अपितु अग्निहोत्र से उत्पन्न सूक्ष्म ऊर्जा वायुमण्डल में १२ किलो मीटर ऊंचाई तक प्रक्षेपित होकर यहां पर विद्मान प्राण ऊर्जा को ग्रहण कर पुनः अग्हिोत्र भस्म में समाहित कर देती है। भस्म में प्रभावी ऊर्जा पाई जाती है। इसे खेती ए मानव व पशु स्वास्थ हेतु उपयोग में लाया जाता है। प्रतिघ्वनि के स्थापन से २०० एकड प्रक्षेत्र एक साथ ऊर्जावान किया जा सकता है। अग्निहोत्र प्रक्रिया में उच्च्व गुणवत्ता वाली सामग्री का उपयोग की जानी चाहिये क्योंकि इसके गुणवत्ता के कारण ही अग्निहोत्र चैतन्य प्रदायी होकर पूर्ण परिणाम प्रदान करने में सक्षम हो पाता है।

प्रदूषण निवारण तथा इसकी ऊर्जा के दोहन का सबसे सश्कत माध्यम अग्निहोत्र है। स्थान विशेष पर नियमित अग्निहोत्र करने से वहां का वातावरण दिव्य हो जाता है जिसे मानव के कल्याण हेतु उपयोग किया जा सकता है ।इसका संबन्ध किसी जातिएधर्म एदेश अथवा पढाई से नही है।आलकल विश्व के १०० से अधिक देश में विधा प्रचलित है ।पर भौतिकता के अन्धी दौड में हम पूर्वजों के धरोहर को भूल गये। वर्तमान समस्या के निवारण जहां सभी आधुनिक प्रयास इसके निवारण में सफल नहिं हो पारहे हैं इस दशा में भारत कि प्राचीन विधावों को संज्ञान में लेने कि आवश्यकता है।

आजकल की मुख्य समस्या प्राणिक ऊर्जा की कमी का है, इसे नतो किसी प्रयोगशाला अथवा किसी फैक्ट्री में बनाया जा सकता है तथा किसी देश से आयात किया जासकता है। प्राणिक ऊर्जा की क्षीण होने के कापण समाज में नाना प्रकार की समस्यायें और विकृतियां आरही हैं। इसका प्रभावी निदान किसी गांव में सघन वृक्षा रोपण, प्राकृतिक खेती के नियमित अग्हिोत्र का अनुपालन तथा इससे प्राप्त भस्म का उपयोग खेती, पशुपालन तथा मानव द्वारा नियमित सेवन करने से प्राणिक ऊर्जा को उपलव्ध कराने का सरल उपाय है। उल्लेखनीय है कि प्रतिघ्वनि बिंदु के स्थापन से २०० एकड क्षेत्र को ऊर्जावान बनाया जासकता है। किसान बंधु के सहयोग से इस इलाके को 'कासमिक गांव' के नाम से की संज्ञा दी जासकती है।

६. कीट व रोग निदान

समान्यतः भूमि में प्रचुर मात्रा में जैविक कार्बन के कारण के कारण कीट व व्याधि का संक्रमण नहीं होता है। पर यदि संक्रमण होने पर जैव नियामक या जैव कीटनाशी को बनाकत उपयोग किया जाय तो सुगमता से इनका निदान किया जा

सकता है। यदि इसके बाद भी संक्रमण दिखे तो अन्य विघायें जैसे फसल चक्र, फंदा फसलें, परपोषी पौधे, यांत्रिक विघायें, फंदा पौध आधारित कीटनाशक यथा नीम पत्ती का अर्क आदि का उपयोग अनुभव के आधापर किया जासकता है।

आदर्श गांव कि संकल्पना

प्राचीन समय खेती से संबध्ति साहित्य को पढने से विदित होता है कि ऋषिए मुनियों ने गुरूकुल, गोशाला में पढाई का प्रचलन हुआ करता था। यहीं पर निवास और पढन-पाढन कि व्यवस्था हजारों वर्षो तक चल रही थी। भगवान राम और भगवान कृष्ण की पढाई इन्ही गुरकुलों में हुयी। गुरकुलों में सघन वृक्षा रोपण, गाय का पालन-पोषणए यज्ञए योग व पढन पाढन सामूहिक रूप मिलजुल कर किया जाता था । गुरूकुल में हि प्रकृति के पंच महाभूत यानी पृथ्वी,जल ,वायु व आकाश कि महत्ता तथा इनका पूजन करने के अनेक साक्ष उपलव्ध हैं । उल्लेखनीय है कि प्रचीन समया में स्थापित गुरकलों में विश्व स्तर का शिक्षण हुआ करता था। इस परिपेक्ष में तक्षसिला और नालंदा का उदारण हैं जहां विश्व के कोने-कोने से छात्र और शिक्षक परिसर में निवास कर पढन-पाढन किया करते थे।

पर आधुनिकता कि अंधी दौर मे ंहम प्राचीन परंपराओं को तिलांजली देदी। इसकी परिणत करोना जैसी महामारी से पूरा समाज जूझ रहा है। इसका निदान कैसे हो पहेली बना हुआ है।

मैं अपने दो दशक के अनुभव से दावे के साथ अनुरोध कर रहा हूं कि अब समय आ गया है की पूवर्जों हजारों वर्षो के अनुभवों अंगीकार कर सामूहिक प्रयास से बढाने का किया जाय। मुझे इस बात की प्रसन्ता है की कुछ लोग पुनः गुरूकुल की परिकल्पना साकार करने में लगे हैं। इनके परिणाम उत्साहवर्धक हैं।

बिडंबना है की भारतवर्ष गावें में बसता है। यहीं से हमें भोजन, जीवन यापन के लिए अन्य सामग्री, दूध ,शहद पहनने के लिये वस्त्रएतथा उद्योगों के लिये नाना प्रकार के कच्चा माल आदि सब गांवो से उपल्ध्य होता है। यदि देश के गावं खुशहाल होगें तभी भारतवर्ष खुशहाल होगा। पर वर्तमान समय में रसायनिक खेती महगी होने के **छोट** गावों की दशा सामान्य नागरिक के निवास के नहीं रह गयी है। इसी कापण विवस होकर गावों से पलायन पूरे परिवार साथ शहारो में नरकीय जीवन में निवास करने के लिये बाध्य हैं। केवल उम्र दराज के लोग को छोटे और मझोले किसानो को खेती करना दूभर होगया है। इसी कारण अधिक तर ये पपिवार के साथ दूर के शहरों में जाकर झुग्गी -झोपडियों में जीवन यापन हेतु अबाधि गति से पलायन कर रहे हैं। किसी शहर में इनके जीवन यापन देखने पर दिल दहल जाता है। पलायन की समस्या से गांव व शहर दोने को झेलना पड रहा है। गांवों में खेती वारी करने के लिये श्रमिक तथा शहरों में नरकीय जीवन यापन के लिये विवश्ता सामान्य होगयी है।

मैं अनुराध करना चाहुंगा की आज भी रसायन आधारित खेती को तिलांजली देकर प्राकृतिक-कासमिक खेती को प्रोतसाहति किया जाय। इसके अनुपालन से हि आर्दश गांव की परिकल्पना को चरितार्थ किया जासकता है।

गांव जहां निवास कर रही जनता को स्वांस लेने के शुघ्द प्राणवायू, उपयेग कि लिये पर्यात मात्रा में शुघ्द जल, ऊर्वर भूमि,सेवन के लिये सभी खाद्य पदार्थ, निवास स्थान, पढन- पाढन और स्वास्थ कि व्यवस्था उपलव्ध हो। गांव में खेती, पशुपालन हेतु बाहर से किसी रसायन की आवश्यता न पडे । इस प्रकार के गांव कि परिकल्पना कासमिक-प्राकृतिक गांव के प्रोत्साहन का प्रयास किया जाना चाहिये। इस समस्या के निदान में हमें प्रकृतिक खेती को प्रोत्साहित करना पडेगा। मेंरी परिकल्पना है कि आदर्श गांव में निम्न व्यस्था से संभावित है।

आदर्श गांव के बिंदु

- जोत अनुसार दो तथा इससे अधिक जितना हो सके देशी गाय का पालन पोषण व इनसे उपलब्ध उम्पादों का नियमित उपयोग किया जाये।
- घर-घर में नित अग्निहोत्र व गांव में समय-समय पर सामूहिक यज्ञ किया जाय।
- भूमि कि उपलव्धतानुसार पौध रोपण व रख रखाव को प्रोतसाहित किया जाय।
- मिलजुल कर जहां प्रतिघ्वनि बिंदु का स्थापन कर 'त्रयंवकम यज्ञ' तथा घर नियमित अग्निहोत्र कि जाय।
- वर्षा जल का अधिक से अधिक गांव में तालए पोखर, झील तथा खेत में रोकने तथा इसके नयी विधावों द्वारा उपयोग को प्रोत्साहित किया जाय।

- गावों में जो जैव अवशेष का जलाना रोका जाय तथा इसका उपयोग पशुवों को खिलाने, कम्पोष्ट बनाने अथवा पलवार के रूप में उपयोग किया जाय।

आज मानव की बहुत सारी दैनिक गतिविघियों से आस पास की जगह को नित प्रदूषित करने का काम करती है। हमें ध्यान रहना चाहिये कि यदि इसी प्रकार पंच महाभूत प्रदूषित कर आने वाली पीढी को सौंपी गयी तो आज के समाज हम सबको माफ नही करेगीं । अतः इस निमित्त निर्णय हम सबको लेना है। अग्होित्र का अनुपालन कर प्राकृतिक खेती के अपना कर हम सब श्री बकिंम चंद की परिकल्पना "सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम" की अवधारणा को पुर्नस्थापित करने सहयोगी बन सकते हैं। प्रकृतिक खेती में केवल बाहर से देशी गाय का व्यवस्था करनी पडती है। दो गायों से ४-५ हेक्टेयर की प्राकृतिक खेती की जा सकती है। छोटे व मझोले किसान जो गायों का पालन कर इनसे उपलव्ध उत्पाद आवश्यकतानुसार कमपोस्ट और जैव नियामक बना कर उपयोग तथा नियमित अग्निहोत्र का अनुपालन कर सकते हैं जिससे सुनहरे भविष्य की परिकल्पना की जा सकती है।

चितंन की बात-छोटे व मझोल किसान जिनकी संख्या ८० करोण के पार हो गयी है केन्द्र शासन को जीविका चलाने के लिये करोणों धनराशि की व्यवस्था करनी पडती है। मेंरी मान्यता है कि यह व्यवस्था कब तक चल पावेगी सोचनीय विषय है। इस धनराशि का थोडा हिस्सा किसानों को प्रेरित करने हेतु करने में व्यय किया जावे ताकि व सामूहिक रूप से प्रकृति का ऊर्जा जो मानव के कल्लाण के लिये लुटा रही है उसका उपयोग कर कासमिक खेती अपना सकें। इस निमित्त छोटे व मझोले किसानो को गाय के पालन, पोषण तथा इनसे प्राप्त उत्पादों से जैव नियामक बनाने और उपयोग हेतु प्रशिक्षित करने पर कासमिक ऊर्जा के उपयोग से कासमिक खेती की असीम संभ्भवनायें हैं ।

प्रधान मंत्री देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिये वैज्ञानिकों तथा किसान का आवाहन कर रहे हैं। बिचार करें कि पोटास को बाहर से मंगाना पडता है।नु वर्तमान समय में जैव अवशेष को खेत में जलाने का प्रचलन बढ गया है। जैव अवशेष में ७० प्रतिशत पोटाश तथा अन्य पोशक तत्व तथा इसके साथ भूमि में विद्दमान सूक्ष्म जीव तंत्र, केचुवे आदि के जलने की संभावना रहती है। इसे किसान के संज्ञान में ले आने की जरूरत है। करोना ने हमारी सोच में बदलाव करने हेतु विवस कर दिया है। अतः प्राकृतिक खेती को व्यसायिक स्तर पर अपनाने हेतु यह एक उत्तम अवशर है।आयें मिलजुल कर आत्मनिर्भर भारत देश बनाने तथा भारतवर्ष को पुनः ष्विश्व गुरूष बनवाने में हनुमान कि भूमिका निभाने में योगदान दे सकें।

कासमिक खेती के मुख्य आयाम अग्निहोत्र, सघन वृक्षारोपण , गोपालन, गाय से उपलवध कराये गये उत्पादों का उपयोग है। गावों में प्रतिघ्वनि के स्थापन से २०० एकड प्रक्षेत्र को ऊर्जावान बनाया जासकता है। उल्लेखनीय है कि रसायन आधारित खेती छोटे व मझोले किसानो के बसमें नहीं रह गयी है। इस कारण गावं छोडकर परिवार के साथ पलायन करने के लिये विवस होरहे है। गावं में रह गये बुजुर्ग तथा देशी गायें दूध बंद होने के बाद इन्हें लावारिस छोड दिया जाने यातो कसाई के पास मरने के बेच दिया जाता है। इन समस्या के निदान के लिये केन्द्र व राज्य शासन चिंतित हैं ए पर कारगर उपाय नहिं मिल पारहा है। इस दशा में प्रकृति आधारित खेती पर शोध और नमूने के रूप में बढाने की आवश्यकता है।

अनुरोध-आज की जटिल समस्याओं को देखते हुये प्रतेक मानव का उत्तरदायित्व बनता है कि सभी का सामुहिक प्रयास होना चाहिये कि आगे आने वाली पीढी को स्वांस लेने लायक वायु ,पीने लायक जल व उपजाऊ भूमि बनाये रखने में अपना योगदान देने का प्रयास करें। इस निमित्त सबके सहयोग की आवश्यकता है। यदि कभी किसी जानकरी की आवश्यकता हो तो बिना किसी हिचक के परामर्श करें। हमारे लिये आप की शंका के समाधान करने में प्रसन्नता होगी।

संज्ञान के लिए २०२३ का बायोडायनमिक पंचांग निम्न है। इसके अनुपालन हेतु संपर्क अपक्षेत है।